डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'आदिवासी एवं वाचिक साहित्य : वर्तमान परिदृश्य' संगोष्ठी का प्रथम दिन

नई दिल्ली। 22 मार्च 2018। साहित्य अकादेमी ने आज 'आदिवासी एवं वाचिक साहित्य : वर्तमान परिदृश्य' विषय पर द्वि–दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन ओड़िसा के प्रख्यात कवि एवं लेखक हलधर नाग ने किया। उन्होंने अपने बचपन के संघर्षमय दिनों को याद करते हुए अपनी लेखन–यात्रा के बारे में बताया। ज्ञात हो कि बहुत कम स्कूली शिक्षा प्राप्त हलधर नाग अपने लोक गीतों और उनके गायन के कारण पूरे देश में लोकप्रिय हैं। उन्होंने सस्वर कुछ लोक गीतों और कुछ अपनी कविताओं का भी पाठ किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि आधुनिक शिक्षा और शोध के क्षेत्र में आदिवासियों को जिस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है, उस पद्धति से, मैं असहमत हूँ। आदिवासी सभ्यता मुख्यतः फैशन आदि के प्रतीकों में ही प्रयुक्त हो रही है और उनके बुनियादी विकास के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया जा रहा है। उन्हें मुख्य धारा में सम्मान के साथ शामिल करने की जरूरत है। समाहार वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि वाचिक साहित्य पूरी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का साहित्य है और इसमें देश की माटी की महक है। यह महक इन धरतीपुत्रों के कारण ही संभव है। वे मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति के सच्चे संरक्षक हैं। उनका साहित्य सौंदर्य दृष्टि से आधुनिक मानकों पर खरा न उतरता हो परंतु वह सबसे शुद्ध और सच्चा सौंदर्य है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि वाचिक साहित्य हजारों वर्षों से उपलब्ध है और सदियों से आदिवासियों के बीच नैतिक और पर्यावरण शिक्षा का प्रमुख स्रोत भी रहा है। उन्होंने अकादेमी द्वारा वाचिक साहित्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया।

'आदिवासी साहित्य : वंचना, विस्थापन और सृजन के अंतर्द्वंद्व' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता महेंद्र कुमार मिश्र ने की और किरण कुमार कावाथेकर, हरीराम मीणा, सुशांत कुमार मिश्र ने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में महेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि आदिवासियों की तीन मुख्य पहचान है भूमि, भाषा एवं जीवन, जिन्हें आधुनिक समाज ने पूरी तरह से नष्ट कर दिया है। विस्थापन की मार झेल रहे आदिवासी अब भी अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे स्वदेशी उपनिवेशवाद के शिकार हो रहे हैं।

कार्यक्रम के अंत में 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रज के लोक गीत एवं लोक नृत्य प्रस्तुत किए गए। हरिसिंह पाल ने इस विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। मथुरा के दिनेश शर्मा और उनके दल द्वारा नृत्य प्रस्तुति की गई। गायन – श्री नत्थु सिंह बघेल और श्रीरामगोपाल सत्यार्थी का था।

कल तीन सत्रों में 'भूमंडलीकरण और आदिवासी साहित्य', 'वाचिक साहित्य : मिथकों की सृजन परंपरा' तथा 'वाचिक साहित्य : प्रलेखन एवं संरक्षण के प्रयास' विषय पर व्याख्यान होंगे।

(के.श्रीनिवासराव)